केलियोप का हृदय-परिवर्तन

केलियोप कैट्सबी आज अपने आपे मे नही था। उस पर गहरी उदासी छायी हुई थी। यह अन्तरीप जिसे दुनियाँ कह कर भी पुकारा जाता है, विशेष तौर से उसका 'क्विकसैड' कहलानेवाला भाग, उसकी दृष्टि में किसी हानिकारक गैस के समूह से अधिक कुछ भी नही था। आधा सीसी का दर्द हो जाय तो तत्वज्ञानी स्वसभाषण करके आराम पा लेगा, स्त्रियाँ रोकर अपना दर्द हल्का कर लेगी, पूर्व के कमजोर निवासी अपनी स्त्रियो को कपडो की कीमत के विषय मे डॉट-फटकार कर मन का बोझ उतार लेंगे, लेकिन क्विकसैड के निवासियो के लिए ये सारे उपाय अपूर्ण थे। विशेष तौर से केलियोप ने तो अपने मन की गहरी निराशा दूर करने का उपाय अपनी बुद्धि के अनुसार ढूढ ही लिया था।

रात को ही केलियोप ने आनेवाली उदासी की पूर्व सूचना दे दी। उसने अपने ही कुत्ते को आक्सिडैटल होटल के बरामदे मे लात मार दी और माफी माँगने से इन्कार कर दिया। बातचीत में भी वह छिद्रान्वेषी और अहंमन्य हो गया था। इधर उधर भटकते हुए, पेडो की टहनियाँ तोड कर, उनके पत्तो को दाँतो से चबाने लगा। यह सब अपशकुन थे। उसकी उदास वृत्ति के विविध स्तरों से परिचित लोगों को एक और लक्षण देखकर भी डर लग रहा था। वह था — उसका अतिशय शिष्टाचार और औपचारिक शब्दो का प्रयोग। उसके सदा के मर्मभेदी, कठोर लहजे का स्थान एक धीमी फुसफुसाहट ने ले लिया था। उसके व्यवहार मे एक खतरनाक तकल्लुफ आ गया और उसकी मुस्कराहट विकृत हो गयी, जिससे उसके चेहरे का बायाँ भाग कुछ तिरछा उठा हुआ दिखाई देने लगा। इन सब लक्षणो से क्विकसैड के निवासियों को आने वाले दुर्भाग्य की पूर्वसूचना मिल गयी।

ऐसे समय, केलियोप अक्सर शराब पीना शुरू कर देता था। उसी दिन आधी रात के करीब वह घर जाता हुआ दिखाई दिया। रास्ते मे मिलने

वाले हर व्यक्ति को वह झुकझुक कर, आपत्तिहीन सभ्यता से नमस्कार करता जा रहा था। अभी तक उसकी उदासी खतरे के स्तर तक नहीं पहुँची थी। खतरे की घण्टी तो तब बजती है जब वह सिल्वेस्टर हजाम की दुकान के ऊपरवाले अपने कमरे की खिड़की में बैठ कर सुबह तक बेसुरे दर्द भरे ग्राम-गीत गाता रहता है और साथ में गिटार की टाँग तोड़ता हुआ शोर मचाता रहता है। उसका हृदय सम्राट नीरो से भी अधिक उदार था इसलिए क्विकसैंड पर आने वाली आपत्ति की संगीतमय सूचना वह पहिले ही दे दिया करता था।

वैसे तो, कैलियोप कैट्सबी एक शान्त और मिलनसार आदमी था—आलस की सीमा तक शान्त और निकम्मेपन की हद तक मिलनसार। ज्यादा वह आवारा और उत्पाती था, पर बिगड़ने पर क्विकसैंड के लिए साक्षात यमदूत। उसका प्रत्यक्ष पेशा था किसी मकानों के दलाल के यहाँ नौकरी करना। सीधेसादे पूरब के निवासियों को वह मकान, जमीन या गोचर दिखाने ले जाया करता था। दरअसल वह दक्षिण का निवासी था। उसका दुबला पतला छः फुट लम्बा ढाँचा, बोलने का अस्पष्ट ढंग और गँवारू मुहावरे इस बात का प्रमाण थे।

परन्तु फिर भी इस पश्चिमी प्रदेश में आ कर बसने के बाद, दक्षिण के रूई के खेत और नील की झाड़ियों में भटकने वाले इस आलसी, निकम्मे और गँवार आदमी ने, उन लोगों की नज़रों में एक गुण्डे की सी शोहरत पा ली थी, जो जीवन भर गुण्डागिरी की कला का अध्ययन करते रहते हैं।

दूसरे दिन सुबह नौ बजे वह बिल्कुल तैयार हो गया। अपने जंगली गीतों से और बोतल भर शराब से प्रेरित होकर क्विकसैंड के निरुत्साही लोगों से नवीन विजयश्री छीन लेने को वह तैयार था। कमर में कारतूसों के आड़े-टेढ़े, गोल, पट्टे बाँधे हुए, कई बन्दूकों से लैस, गले तक नशे में डूबा, वह क्विकसैंड के बाजार में निकला। वह इतना उदार था कि शहर को चकित करके चुपचाप घेरना नहीं चाहता था, इसलिए उसने नुक्कड़ पर आकर रणभेरी बजायी। स्टीम पियानो के समान कर्कश चीत्कार ही उसका नारा था जिसने उसके लिए जन्म के नाम को मिटा कर 'कैलियोप' जैसा श्रेष्ठ नाम कमाया था। चीत्कार के साथ ही उसने अपनी बन्दूक से तीन गोलियाँ छोड़ी—कुछ तो निशाना आजमाने के लिए और कुछ बन्दूक को गरमाने के लिए। आक्सिडैंटल होटल के मालिक कर्नल स्वाज़ी का पीला

कुत्ता, आखिरी बार भौंक कर, धूल चाटता हुआ जमीन पर आ गिरा। ब्ल्यूफ्रन्ट के स्टोर में से हाथ में कैरोसीन की बोतल ले कर सड़क पार करता हुआ एक मैक्सिकन यकायक जोर से भागा। अभी तक उसके हाथ में टूटी हुई बोतल का सिरा पकड़ा हुआ था। जज राइली के पीले और नीले रंग के दुमंज़िले मकान पर लगा हुआ, चमकीला, वायुदर्शक पंखा काँपा, लड़खड़ाया और टूट कर नीचे की ओर लटक गया। तूफान आने पर भी यही हालत होती है।

केलियोप की बन्दूक तैयार थी और हाथ सधा हुआ। युद्ध का स्वाभाविक उल्लास उस पर छाया हुआ था। यदि कड़वाहट या उदासी थी तो सिर्फ इतनी कि सिकन्दर के समान उसकी विजय का प्रदेश भी क्विकसैंड की छोटी-सी दुनियाँ से मर्यादित था।

चारों तरफ गोलियाँ चलाता केलियोप आगे बढ़ा। काँच के टुकड़े ओलों के समान बरसने लगे, कुत्ते इधर उधर भागने लगे, मुर्गे कुकड़ूं-कूं करते हुए पंख फड़फड़ाने लगे, और गली में खेलते हुए बच्चों को पुकारने के लिए चिन्तायुक्त जनानी आवाजें चीखने लगीं। इस सब शोरोगुल के बीच बीच में कैलियोप की बन्दूक गूँज उठती और यह गूँज भी कभी कभी उस चीत्कार में डूब जाती जिससे क्विकसैंड के निवासी भलीभाँति परिचित थे। जिन दिनों केलियोप पर इस तरह की उदासी छा जाती, उन दिनों क्विकसैंड में कानूनन छुट्टी घोषित कर दी जाती थी। जिस गली में उसका आगमन हो जाता, दुकानों के नौकर खिड़कियाँ और दरवाजे बन्द कर देते। कुछ समय के लिए कारोबार बिल्कुल बन्द हो जाता। मार्ग में सबसे पहिल चलने का अधिकार उसी का था। विरोध के अभाव में और ध्यान बँटने का कोई ज़रिया न होने से, उसकी उदासी और भी गहरी हो जाती।

परन्तु आज चार चौक आगे श्रीमान कैट्सबी को, बन्दूक से बन्दूक का जवाब देने और उनके मारपीट के शौक का स्वागत करने के लिए जोर शोर से तैयारियाँ हो रही थीं। पिछली रात ही शहर कोतवाल बक पैटरसन के पास, कैलियोप के आसन्न विस्फोट का समाचार ले कर, कई अर्दली आ चुके थे। कोतवाल साहब अब तक इस गुण्डे के करनामें सहन करते रहे परन्तु अब उनकी सहिष्णुता की सीमा आ चुकी थी। मनुष्य के स्वाभाविक उबाल को क्विकसैंड के निवासी सदा से कुछ नज़रअन्दाज़ कर देते थे। बशर्ते कि शहर के शान्तिप्रिय निवासियों के जीवन से व्यर्थ खिल-

बाड़ न किया जाय और उनकी सम्पत्ति को बेकार नष्ट न किया जाय, शहर के निवासियों की भावना, कानून के सख्त प्रवर्तन के खिलाफ ही रहती थी। परन्तु कैलियोप यह सीमा लाँघ चुका था। उसके आवेग आजकल इतने अधिक और हिंसक होने लगे थे कि वे मनुष्य के स्वाभाविक और स्वस्थ आवेश के दायेर में नहीं आ सकते थे।

अपने छोटे से कमरे में बैठा हुआ बक पैटरसन कैलियोप की नाराजी की घोषणा करने वाली, उस चीत्कार की प्रतीक्षा कर रहा था। यह संकेत मिलते ही वह उठ खड़ा हुआ और उसने अपनी बन्दूकें सम्हाल लीं। दो दरोगा और तीन अनुभवी बन्दूकबाज नागरिक, कैलियोप की गोलियों का मुकाबला करने उसकी मदद के लिये आ गये थे। व्यूह रचना करते हुए बक पैटरसन ने आदेश दिया, "उसे घेरे में ले लो। बोलना बिल्कुल नहीं और दिखाई देते ही गोली चला देना। अपने आप को बचाकर उस पर वार करना। वह नम्बरी बदमाश है, परन्तु मुझे विश्वास है कि अबकी बार उसे धूल चाटनी पड़ेगी। चारों ओर बिखर कर उसे घेर लो और देखो, लापरवाही बिल्कुल नहीं बरतना क्योंकि कैलियोप का निशाना कभी खाली नहीं जाता।"

लम्बा, गठीला शरीर, गम्भीर मुँह, और आसमानी कमीज पर कोतवाल का पदसूचक, चमकता बिल्ला लगाये हुए बक पैटरसन ने अपने साथियों को कैलियोप पर धावा बोलने की सूचनाएँ दे दीं। योजना यह थी कि आक्रमनकारियों को यथासम्भव नुकसान न पहुँच कर भी उस यमदूत का पतन हो जाय।

बदले की तैयारियों से बेखबर, उन्मत्त कैलियोप, धुवाँधार गोलियों की बौछार करता, आगे बढ़ रहा था कि एकाएक उसे सड़क के बीच में आड़ लगायी हुई दिखाई दी। कुछ खाली बक्सों के पीछे छिप कर कोतवाल और उसके एक साथी ने गोली चलायी। उसी समय दल के अन्य लोग बिखर गये और सावधानी से कदम बढ़ाते हुए, इधर उधर की गलियों के मार्ग से कैलियोप को चारों ओर से घेर कर खड़े हो गये।

गोलियों की पहिली बौछार से केलियोप की बन्दूक का घोड़ा टूट गया, उसका दाहिना कान नीचे की ओर से थोड़ा चिर गया और कमर में लगे कारतूसों में से एक के फूटने से उसकी पसलियों में खरौंच आ गयी। कैलियोप के लिए इन बातों ने मानसिक सन्ताप से राहत देनेवाली ताकत

की दवा का काम किया और कमर कस कर अपने स्वाभाविक ढंग से चीत्कार करते हुए उसने प्रतिध्वनि के समान, गोली का जवाब गोली से दिया। कानून के रक्षकों ने बचने की कोशिश की, परन्तु एक दरोगा की कुहनी के नीचे एक गोली लग गयी और गोली खाकर उड़े हुए लकड़ी के एक टुकड़े के लगने से पैटरसन साहब के गाल में से रक्त की धारा बह निकली।

केलियोप ने अब दुश्मन के हथकंडों का मुकाबला किया। एक क्षण में उसने यह निश्चय कर लिया कि किस मोर्चे से आने वाली गोलियों की बौछार सबसे कमजोर और लक्ष्यहीन है और बीच सड़क से भागकर, उसने दुगने आवेग से, उस ओर धावा बोल दिया। असाधारण धूर्तता से उस दिशा के विरोधी पक्ष ने—जिसमें एक दरोगा और दो बहादुर स्वयंसेवक थे—लकड़ी के डिब्बों के पीछे कुछ देर छिपे रह कर कैलियोप को आगे बढ़ जाने दिया और पीछे से उस पर हमला बोल दिया। दूसरे ही क्षण कोतवाल साहब और उनके साथियों ने कुमुक पहुँचायी और कैलियोप को यह सोचने पर विवश कर दिया कि यदि युद्ध का आनन्द लम्बे समय तक जारी रखना हो तो उसे अपने विरोधियों का बल कम करने का कोई न कोई उपाय जरूर ढूँढ़ना पड़ेगा। उसकी नजर एक ऐसे स्थान पर पड़ी जो उसकी आवश्यकता को पूरा कर सकता था, बशर्ते कि वहाँ पहुँच जाय।

पास ही छोटा-सा रेल का स्टेशन था। प्लैटफार्म पर जमीन से कोई चार फुट ऊँचा बना हुआ छोटा-सा लकड़ी का मकान था जिसकी हर दीवार में एक खिड़की थी। भारी संख्या में विरोधियों से घिरे हुए किसी व्यक्ति के लिए तो वह एक किले का काम दे सकता था।

कैलियोप ने बहादुरी के साथ तेजी से उसी ओर दौड़ लगायी। कोतवाल की सेना ने गोलियों के धुएं से उसे घेर लिया। अपने आश्रय स्थान तक वह निरापद पहुँच गया। ज्यों ही सूरमाओं का दल वहाँ पहुँचा, स्टेशन मास्टर साहब गिलहरी की तरह खिड़की से कूद कर भाग गये। पैटरसन और उसके साथियों ने भी मलवे के एक ढेर के पीछे अपना मोर्चा लगाया और विचार विनिमय करने लगे। स्टेशन के मकान में एक निर्भीक गुण्डा छिपा है, जिसका निशाना अचूक है, और जिसके पास काफी बारूद है। घिरे हुए किले के चारों ओर कोई तीस तीस गज तक बिल्कुल खुला मैदान है।

स्पष्ट है कि जो व्यक्ति उस अरक्षित क्षेत्र में पाँव रखेगा वह कैलियोप की गोली का निशाना बन जायगा।

कोतवाल दृढ़ था। उसने निश्चय कर लिया था कि दुबारा क्विकसैंड की गलियों में कैट्सवी की चीत्कार कभी नहीं गूँजने दूँगा। वह इस बात की घोषणा भी कर चुका था। सरकारी और व्यक्तिगत, दोनों तौर से, वह इस बात को अपना कर्तव्य मान चुका था कि गड़बड़ी के स्रोत इस गुण्डे पर वह रोक लगा कर रहेगा। उसने सब को अब तक बहुत परेशान कर दिया था।

पास ही में छोटा-मोटा सामान ढोने का एक ठेला पड़ा था। वहीं पर, चरागाह से शहर में भेजने के लिए, कई बोरे ऊन के रखे हुए थे। ठेले पर कोतवाल और उनके साथियों ने ऊन के तीन बड़े बड़े बोरे लादे। आत्मरक्षा के लिए इन बोरों के पीछे झुका हुआ, बक पैटरसन ठेले को धीरे धीरे आगे खिसकाता कैलियोप के किले की तरफ बढ़ा। उसके साथी चारों ओर बिखर कर इस तैयारी में खड़े हो गये कि घिरा हुआ शिकार, यदि अपनी ओर सरकने वाले कानून के उस पहरेदार को चकमा देने की कोशिश करे तो वे उसे रोक लें। कैलियोप ने सिर्फ एक बार अपनी झलक दिखाई। एक खिड़की से उसने गोली चलायी, परन्तु कोतवाल के विश्वसनीय कवच से ऊन के कुछ रेशे उड़ने के सिवाय और कुछ नहीं हुआ। दल द्वारा छोड़ी गयी गोलियाँ किले की खिड़कियों से टकराकर शान्त हो गयीं। दोनों ओर कोई नुकसान नहीं हुआ।

कोतवाल, अपने सुरक्षित रथ को आगे बढ़ाने में इतना उलझा हुआ था कि कुछ ही मिनिट बाद, प्लैटफार्म पर आनेवाली सुबह की गाड़ी की बात ही भूल गया। वह प्लैटफार्म से कुछ ही दूरी पर था कि दूसरी तरफ से गाड़ी आती दिखाई दी। गाड़ी यहाँ एक ही मिनिट रुकती थी! ओफ। कैलियोप के लिए यह कितना सुन्दर अवसर था? पिछले दरवाजे से एक कदम बाहर निकलो, गाड़ी में चढ़ो और चल दो।

उस कवच को एक ओर फेंक कर बक पैटरसन, बन्दूक सम्हाले आगे बढ़ा और कमरे के ज़ीने पर आ खड़ा हुआ। अपने दृढ़ कन्धे के एक ही धक्के से उसने दरवाज़ा खोल दिया। उसके साथियों को कमरे में गोली की एक आवाज़ सुनाई दी और उसके बाद सब कुछ शान्त हो गया।

कुछ समय बाद घायल व्यक्ति ने अपनी आँखे खोलीं। थोड़ी देर तक सुन्न रहने के बाद, उसमें देखने, सुनने, सोचने और समझने की चेतना लौटी। चारों ओर आँखें दौड़ाते हुए उसने देखा कि वह लकड़ी के तख्ते पर पड़ा हुआ था। उद्विग्न मुखवाला एक लम्बा आदमी जिसके सीने पर "शहर कोतवाल" का पद सूचक बिल्ला लग रहा था, उसके ऊपर झुका हुआ था। काले कपड़े पहिने, झुर्रीदार चेहरेवाली और काली, चमकती आँखों वाली एक बुढ़िया उसकी एक कनपटी पर गीला रूमाल फेर रही थी। घायल, परिस्थिति को समझने और बीती घटनाओं के साथ उसका सामंजस्य बिठाने की कोशिश कर ही रहा था कि बुढ़िया बोली,

"वाह रे मेरे बहादुर, शेर, पहलवान! गोली ने तो तुझे छुआ भी नहीं। वह तो तेरे सिर को खरोंचती हुई निकल गयी थी जिससे तू बेहोश हो गया। इस तरह की बातें मैंने पहले भी सुनी है। इसे 'झटका लगना' कहते हैं। एबल वाइकिन गिलहारियों को इसी तरह मारता था। थोड़ी सी खाल छिल गयी है, और कुछ नहीं। तू तो जल्दी ही अच्छा हो जायगा। काफ़ी ठीक हो भी गया है—क्यों? थोड़ी देर चुपचाप पड़ा रह, जब तक मैं तेरा सिर धो दूँ। तू शायद मुझे नहीं जानता पर इसमें अचरज की क्या बात। मैं अभी अभी अपने लड़के से मिलने अल्वामा से आयी हूँ – इसी गाड़ी से। मेरा बेटा भी काफी लम्बा चौड़ा है। लगता है जैसे छोटा बच्चा तो वह कभी था ही नहीं। यह है मेरा लड़का।"

कुछ घूम कर बुढ़िया ने उस खड़े हुए आदमी की तरफ देखा और उसके जीर्ण चेहरे पर गर्व की एक मधुर मुस्कान बिजली की तरह चमक गयी। नीली शिराओं से भरे हुए अपने रूखे हाथ में उसने अपने बेटे का हाथ भींच लिया। फिर नीचे पड़े हुए मनुष्य की तरफ उत्साह से मुस्कराते हुए, वेटिंग रूम की टीन की बेसिन में रूमाल डुबो डुबोकर वह उसकी कनपटी पर रखने लगी। बुढ़िया स्वभाव से ही वाचाल थी।

"आठ साल से मैंने अपने लड़के को देखा तक नहीं है। मेरा एक भानजा है, एलकानाह प्राइस — जो इसी रेलवे में बाबू है। उसने मुझे यहाँ आने का पास ला दिया। मैं यहाँ एक हफ्ते तक ठहर कर उसी पास से वापिस जा सकती हूँ। सोचिये तो, मेरा वह छोटा-सा बेटा, आज कितना बड़ा अफसर हो गया है! पूरे शहर का कोतवाल! यह

कोतवाल तो सिपाही जैसी ही कोई चीज होती है न ? मुझे तो मालूम भी नहीं था कि वह एक अफसर बन गया है। अपनी चिट्ठियों में भी उसने इस बात का जिक्र तक नहीं किया। वह शायद यह सोचता होगा कि मेरे इस खतरनाक काम की वजह से माँ को डर लगेगा। पर नहीं, मैं डरने वाली कहाँ ? और उससे फायदा भी क्या ? गाड़ी से उतरते ही मैंने बन्दूकों की धड़ाधड़ सुनी और इस कमरे में से धुँआ निकलता हुआ दिखाई दिया; पर मैं बिना किसी डर के सीधी यहाँ चली आयी। खिड़की में से मैंने मेरे बेटे को झांकते हुए देखा और उसे तुरन्त पहिचान लिया। दरवाजे पर ही वह मुझे मिल गया। उसने मुझे अपनी बाहों में इतनी जोर से कस लिया कि मेरा तो दम ही निकल गया। तुम यहाँ बेहोश पड़े थे, मरे समान—और मैंने सोचा कि देखूँ मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकती हूँ।"

घायल बोला, "मैं अब बैठना चाहता हूँ। अब मैं ठीक हूँ।" कुछ कमजोरी के कारण दीवार का सहारा लेकर वह बैठ गया। वह एक लम्बा, चौड़ा, कठोर और मजबूत आदमी दिखाई देता था। उसकी स्थिर और तीखी आँखें रह रह कर सामने खड़े हुए मनुष्य की ओर उठ जाती थीं। उसके चेहरे का अध्ययन करते हुए, उसकी दृष्टि कभी कभी उसके सीने पर लगे हुए कोतवाल के बिल्ले पर भी जा पड़ती थी।

उसकी बाँह को थपकते हुये बुढ़िया बोली, "हाँ हाँ तुम जल्दी ही अच्छे हो जाओगे, बशर्ते कि बदमाशी करना छोड़ दो और लोगों को गोली चलाने के लिए मजबूर न करो। जब तुम जमीन पर बेहोश पड़े थे तब मेरे बेटे ने मुझे सब कुछ बता दिया था। तुम्हारे ही जैसा तगड़ा बेटा मेरा भी है इसलिए मेरी बातों से यह मत समझना कि मैं तुम्हारे काम में खामखाँ टाँग अड़ा रही हूँ। मेरे बेटे को तुम्हें गोली मारनी पड़ी, इसलिए भी मन में डाह मत रखना। कानून की रक्षा और अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए अफसरों को ऐसा करना ही पड़ता है और बुरा काम करने वालों को भी यह सहन करना ही पड़ता है। इसलिए भाई, मेरे बेटे को दोष मत देना। उसका कोई कसूर नहीं है। वह तो हमेशा से बड़ा अच्छा लड़का रहा है—आज्ञाकारी, दयालु और सदाचारी, अब तुम कहो तो मैं तुम्हें कुछ राय दूँ। ऐसा काम फिर कभी मत करना। अच्छे आदमी बनो, शराब छोड़ दो, शान्ति से रहो, भग-

बान से डरो। बुरी सोहबत से दूर रहो, ईमानदारी से काम करो और चैन की बांसुरी बजाओ।"

उपदेश देते समय बुढ़िया ने काले दस्ताने पहिने हाथों से घायल आदमी के कन्धों को सहलाया। उसका चेहरा बहुत ही निष्कपट और सच्चा दिखाई देता था। फटे-पुराने काले कपड़े और जर्जर टोप लगाये वह अपने लम्बे जीवन के अन्तिम दौर से गुज़र रही थी और संसार के अनुभवों की मूर्तिमान प्रतिमा सी दिखाई देती थी। परन्तु घायल आदमी तो बुढ़िया के पीछे चुपचाप खड़े हुए उसके बेटे को ही घूर रहा था। एकाएक वह बोला, "कोतवाल साहब की क्या राय है? क्या वे भी इस उपदेश को अच्छा मानते हैं? ऐसा है तो अपने मुँह से कह दें।" वह लम्बा मनुष्य व्यग्रता से कुछ हिला! सीने पर लगे बिल्ले को उँगलियों से टटोलते हुए, उसने बुढ़िया को अपनी ओर खींच लिया। वह मुस्कराने लगी—साठ साल की किसी माँ की शाश्वत मुस्कराहट! अपनी टेढ़ी मेढ़ी उँगलियों से वह बेटे का मजबूत हाथ थपथपाने लगी।

नीचे पड़े हुए आदमी की आँखों में आँखें डालकर वह आदमी बोला, "बेशक, तुम्हारी जगह अगर मैं होता, तो मैं इस बात को मान लेता। यदि मैं एक निर्लज्ज और निराश पियक्कड़ या गुण्डा होता तो मैं जरूर इस बात को मानता। अगर तुम्हारे स्थान पर मैं और मेरे स्थान पर तुम होते तो मैं कहता, कोतवाल साहब, मुझे एक बार मौका दीजिये। मैं कसम खा कर कहता हूँ कि मैं इस जंजाल को छोड़ दूँगा। मारपीट और लड़ाई और बन्दूकबाजी – सब कुछ त्याग दूँगा। बेवकूफी छोड़कर मैं एक अच्छा नागरिक बनूँगा और मेहनत करूँगा। ईश्वर मेरी सहायता करे। यदि तुम कोतवाल होते और तुम्हारी जगह मैं होता तो मैं यही कहता!"

खुशी में आकर बुढ़िया बोली, "सुना तुमने? इसकी बात मान लो। वादा करो कि तुम अच्छे आदमी बनोगे और फिर यह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेगा। एकतालिस साल हो गये इसका जन्म हुए और तब से आज तक इसने सचाई से कभी मुँह नहीं मोड़ा।"

लेटा हुआ आदमी खड़ा हो गया और अपने हाथ पाँव झटक कर जाँचते हुए बोला, "यदि मैं कोतवाल होता और तुम ऐसा वादा करते तो मैं कहता, जाओ, तुम स्वतंत्र हो। अपना वचन निभाने की पूरी कोशिश करना।"

एकाएक घबरा कर बुढ़िया बोली, "अरे राम, मैं अपनी पेटी तो भूल ही गयी। मजूर ने पेटी उतार कर प्लैटफार्म पर तो रखी, परन्तु खिड़की से झाँकते हुए अपने बेटे का मुँह देखकर मैं तो ऐसी भागी कि पेटी की सुध ही नहीं रही। उसमें खुद के हाथों से बनाये हुए बेल के मुरब्बे की आठ बरनियाँ है। मैं तो उन्हें जान से ज्यादा जतन करके यहाँ तक बाँधे लायी हूँ।"

चिन्तित सी, वह फुर्ती से बाहर चली गयी। केलियोप कैट्सबी ने बक पैटरसन से कहा, "माफ करना बक, और कोई चारा ही नहीं था। खिड़की से मैंने उसे आते हुए देखा। मेरी आवारागर्दी के सम्बन्ध में उसने एक शब्द भी नहीं सुना है। मेरी उसे यह बताने की कभी हिम्मत ही नहीं हुई कि मैं समाज द्वारा तिरस्कृत एक निकम्मा आदमी हूँ। गोली लगने से तुम वहाँ बेहोश, मरे हुए से पड़े थे। एकाएक एक विचार आया और मैंने तुम्हारा बिल्ला तुम्हारे कमीज़ से खोलकर अपने सीने पर लगा लिया। मेरी शोहरत तुम्हारे सिर थोप दी। माँ से मैंने यही कहा, मैं तो शहर कोतवाल हूँ और तुम एक भयानक गुण्डे। तुम अपना बिल्ला वापिस ले सकते हो, बक।"

काँपती हुई उँगलियों से केलियोप कमीज पर लगा बिल्ला खोलने लगा। बक पैटरसन बोला, "जरा ठहरो। केलियोप कैट्सबी, उस बिल्ले को वहीं रहने दो। और जब तक तुम्हारी माँ शहर छोड़कर चली नहीं जाती तब तक उसे खोलने की हिमाकत करना भी नहीं। जब तक वह यहाँ रहती है क्विकसैंड शहर के कोतवाल तुम हो। मैं शहर में घूमकर इस बात का बन्दोबस्त कर दूँगा कि यह रहस्य तुम्हारी माँ के सामने कोई न खोल सके। और अब, ए पाजी, नीच, गधे, माँ के उपदेश का पालन कर। मैं भी उस पर अमल करूँगा।"

केलियोप का गला भर आया। हकलाते हुए वह बोला, "बक, अगर मैं ऐसा न करूँ तो मुझसे ज्यादा..."

बक चिल्लाया, "चुप कर, वह वापिस आ रही है।"